64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി തിയ്യതി.....

Item Code: 958 Participant Code: 044

मिट्टी की पुकार

मिट्टी को कुछ कहना है,
लोगों को कुछ याद दिलाना है,
लेकिन सुनता है कौन?
सबको अपना काम है।

मिट्टी बुलाती है
आओ बच्चे खेलो मेरे साथ
लेकिन मोबाइल के दुनिया में अटक गया है वो
फिर सुनता है कौन?
सबको अपना काम है।

मिट्टी पुकारती है,
आओ देखो ये सुन्दर फूल
इसकी तरह चमकती सुन्दरता दिल में दिखाना है
और ये सुन्दरता दूसरे को भी दिखाना है।
लेकिन सुनता है कौन?
सबको अपना काम है।

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

मिट्टी कहता है,
देखो ये फल भरी पेड़।
इसमें जितना फल होता है, उतना नीचे आता है।
वैसे, जितना बड़ता है, उतना विनय दिखाना है।
लेकिन यह सुनता है कौन? सबको अपना काम है।

मिट्टी याद दिलाती है,
देखो इस नदी को।
जितने पत्थर में आकर मारता है, फिर भी आगे बढ़ताहै
वैसे जितना कष्ठ का सामना करना पड़ता है, पीछे न
देखकर आगे बढ़ना है।
लेकिन सुनता है कौन?
सबको अपना काम है।

मिट्टी दिखाती है,
देखो उस माहताब को
इस अँधकार भरी आसमान में अकेले चमकते है
वैसे, हमें समझना है की, अकेलेपन में चमकने मे कोई
कष्ठ नहीं है।
लेकिन सुनता है कौन? सबको अपना काम है।

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

मिट्टी वेदना की बात करती है,
इस प्रकृति में मैंने उन्स, अश्क, ख्वाब, ख्वाहिश,
इशरत सभी देखते हैं, हर वक्त।
पर इतना बड़ा इनसानों इतनी छोटी चीज़ों को भी
नहीं देखते हैं।
मेरी यह दुःख ही सुनता है कौन?
सबको अपना काम है!!!